सुसमाचार

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
तीन

मरकुस रचित सुसमाचार

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:23) 5

II. पृष्ठभूमि (1:52) 5

A. लेखक (2:07) 5

1. पारम्परिक दृष्टिकोण (2:20) 5

2. व्यक्तिगत इतिहास (6:46) 5

B. मूल पाठक (9:51) 6

1. आरम्भिक कलीसिया की गवाही (10:20) 6

2. सुसमाचार के विवरण (11:49) 6

C. अवसर (15:31) 7

1. तिथि (15:47) 7

2. उद्देश्य (17:47) 7

III. संरचना एवं विषय-सूची (22:55) 8

A. मसीहा की घोषणा (24:00) 8

B. मसीहा की सामर्थ (27:04) 8

1. परिचय (29:09) 8

2. कफरनहूम के निकट (30:35) 8

3. गलील का क्षेत्र (35:04) 9

4. गलील के पार (42:07) 10

C. प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि (50:16) 10

D. कष्ट सहने वाला मसीहा (52:41) 10

1. तैयारी (53:12) 10

2. सामना (1:02:28) 12

3. अनुभव (1:07:20) 13

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

E. मसीहा की विजय (1:12:57) 14

IV. प्रमुख विषय (1:17:25) 15

A. कष्ट सहने वाला दास (1:18:24) 15

1. यहूदी अपेक्षाएँ (1:18:56) 15

2. यीशु की सेवकाई (1:24:07) 15

3. उपयुक्त प्रत्युत्तर (1:30:00) 16

B. विजय प्राप्त करनेवाला राजा (1:36:32) 16

1. राज्य की घोषणा की (1:37:51) 17

2. सामर्थ एवं अधिकार का प्रदर्शन किया (1:39:42) 17

3. शत्रुओं पर जय प्राप्त की (1:43:35) 18

V. उपसंहार (1:50:57) 19

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 20

उपयोग के प्रश्न 25

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:23)

मरकुस के मन में मसीहियों का सताव था जब उसने यह सुसमाचार लिखा।

II. पृष्ठभूमि (1:52)

A. लेखक (2:07)

1. पारम्परिक दृष्टिकोण (2:20)

- पापियास, जो एशिया माइनर में हियरापुलिस का बिशप था, ने मरकुस को दूसरे सुसमाचार का लेखक बताया था।
- मरकुस ने पतरस पर निर्भर होकर सुसमाचार लिखा।
- एन्टी-मार्शियनाइट प्रोलोग और आइरेनियस मरकुस के लेखक होने का दावा करते हैं।

2. व्यक्तिगत इतिहास (6:46)

- मरियम नामक एक महिला का पुत्र
- बरनबास का चचेरा भाई
- पहली मिशनरी यात्रा में पौलुस और बरनबास की सहायता की थी।
- रोम में पतरस की सहायता की।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. मूल पाठक (9:51)

इटली की कलीसियाएं मरकुस की मूल श्रोता थीं।

1. आरम्भिक कलीसिया की गवाही (10:20)

पापियास, एन्टी-मार्शियनाइट प्रोलोग और आइरेनियस - सबने यह जानकारी दी है कि मरकुस ने अपने सुसमाचार को इटली में लिखा।

2. सुसमाचार के विवरण (11:49)

- फिलिस्तीनी रीतियां
- अरामी अभिव्यक्तियाँ
- लैटिन शब्द
- रूफुस

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. अवसर (15:31)

1. तिथि (15:47)

पहली सदी के 60 के दशक के मध्य से अन्त में

2. उद्देश्य (17:47)

- यीशु की सेवकाई के पतरस के अभिलेख को सुरक्षित रखना।

- यीशु के जीवन से बातों को सीखना।

रोम की कलीसिया रोमी सम्राट नीरो के अधीन अत्याचार सह रही थी।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. संरचना एवं विषय-सूची (22:55)

A. मसीहा की घोषणा (24:00)

मसीहा को :

- राजा दाऊद का वंशज होना था
- शाही सिंहासन को इस्राएल को वापस लौटाना था
- राष्ट्र को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की ओर लाना था

B. मसीहा की सामर्थ (27:04)

1. परिचय (29:09)

मरकुस ने गलील और उसके आस-पास के क्षेत्र में यीशु की सेवकाई पर ध्यान केन्द्रित किया।

2. कफरनहूम के निकट (30:35)

- पहले चेले : 1:16-20
- कफरनहूम में सुसमाचार का प्रचार : 1:21-34
- आस-पास के गाँवों में सुसमाचार का प्रचार : 1:35-45

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- कफरनहूम में विरोध : 2:1-3:6

3. गलील का क्षेत्र (35:04)

- भीड़ से दूर जाना : 3:7-12

- बारहों को नियुक्त करना : 3:13-19

- गालील में विरोध : 3:20-35

- दृष्टान्त : 4:1-34

- सामर्थ के प्रदर्शन : 4:35-5:43

- नासरत में विरोध : 6:1-6

- बारह चेलों का भेजा जाना : 6:7-13

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. गलील के पार (42:07)

- बढ़ती हुई ख्याति : 6:14-29
- चमत्कार : 6:30-56
- निरन्तर विरोध : 7:1-23
- और अधिक चमत्कार : 7:24-8:26

C. प्रेरितों द्वारा मसीहा की पुष्टि (50:16)

यीशु के चेलों ने अंगीकार किया कि वही मसीहा है।

D. कष्ट सहने वाला मसीहा (52:41)

1. तैयारी (53:12)

- राज्य का प्रभु: 8:31-9:29

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- कष्ट, मृत्यु और पुनरूत्थान : 8:31-9:1
- रूपान्तरण : 9:2-13
- अद्वितीय सामर्थ : 9:14-29

- राज्य के मूल्य : 9:30-10:31
  - कष्टों की भविष्यवाणी : 9:30-31
  - आदर : 9:32-42
  - महत्व : 9:43-50
  - विवाह : 10:1-12
  - बच्चे : 10:13-16
  - धन : 10:17-31

- राज्य में नेतृत्व : 10:32-52
  - कष्टों की भविष्यवाणी: 10:32-34
  - कष्टों में सहभागी : 10:35-40

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- सेवा : 10:40-45
- प्रेरणा : 10:46-52

2. सामना (1:02:28)

- विरोध की घटनाएँ : 8:31-12:41
  - विजयी प्रवेश : 11:1-11
  - अंजीर का पेड़ : 11:12-14, 20-25
  - मन्दिर का शुद्धिकरण : 11:15-19
  - महायाजक, व्यवस्थापक, और पुरनिए : 11:27-12:12
  - हेरोदी और फरीसी : 12:13-17
  - सदूकी : 12:18-27
  - व्यवस्थापक : 12:28-44
- जैतून व्याख्यान : 13:1-37

  जैतून के पहाड़ पर दिया गया

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने अपने चेलों को भविष्य में आने वाली कठिनाई की चेतावनी दी ताकि वह उन पर अचानक न आ पड़े।

3. अनुभव (1:07:20)

- दफनाए जाने के लिए अभिषेक : 14:1-1
- चेलों के साथ अन्तिम घंटे : 14:12-42
- गिरफ्तारी और मुकद्दमें : 14:43-15:15
- क्रूस पर चढ़ाया जाना: 15:16-47

रोमियों के हाथों यीशु के कष्ट सहने ने इन घटनाओं को मरकुस के मूल पाठकों से दृढ़ता से जोड़ा होगा।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

E. मसीहा की विजय (1:12:57)

मरकुस के प्राचीन यूनानी हस्तलेख तीन अलग-अलग प्रकार से समाप्त होते हैं :

- पद 8 में समाप्त होता है

- पद 20 में समाप्त होता है

- पद 8 के बाद दो कथनों में समाप्त होता है

डर पर बल इस सुसमाचार को समाप्त करने का एक अत्यधिक उपयुक्त तरीका है।

स्वर्गदूत का संदेश स्पष्ट और प्रत्यक्ष था : यीशु ने मृत्यु को जीत लिया था और वह विजयी होकर जी उठा था।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. प्रमुख विषय (1:17:25)

A. कष्ट सहने वाला दास (1:18:24)

1. यहूदी अपेक्षाएँ (1:18:56)

यहूदी मसीहारुपी आशाओं के विविध रूप थे :

- जेलट : रोम के विरूद्ध विद्रोह
- विभिन्न रहस्यवादी समूह : अलौकिक हस्तक्षेप
- व्यवस्थावादी : व्यवस्था का पालन

भविष्यवक्ता यशायाह ने मसीहा की कष्ट सहने की भूमिका को दर्शाया।

2. यीशु की सेवकाई (1:24:07)

यीशु ने बहुत से विभिन्न प्रकार के लोगों को चंगा किया और उनके बीच सेवकाई की।

यीशु का नेतृत्व परमेश्वर और अधीनस्थों की सेवा का एक रूप है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. उपयुक्त प्रत्युत्तर (1:30:00)

यीशु वफादारी और स्थिरता की माँग करता है : मरकुस 12:30

यीशु का अनुसरण करने में शामिल है :

- बलिदान और कष्ट
- उसके प्रति समर्पण
- ऐसा जीवन व्यतीत करना जिससे संसार घृणा करता है

यदि हम अपनी सामर्थ पर निर्भर हैं तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना असंभव है।

B. विजय प्राप्त करनेवाला राजा (1:36:32)

मसीहा दाऊद का वंशज होगा :

- भजन 89, 110 और 132
- मरकुस 12:35

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु को दाऊद का पुत्र कहा जाता है :

- मरकुस 10:47-48
- मरकुस 14:61-62
- मरकुस 15:2

1. राज्य की घोषणा की (1:37:51)

- प्रचार की सेवकाई
- दृष्टान्त

2. सामर्थ एवं अधिकार का प्रदर्शन किया (1:39:42)

- प्रकृति और दुष्टात्माओं पर उसकी इच्छा : मरकुस 1:24, 3:11, 4:41, 5:7
- आश्चर्यजनक चंगाइयां
- राज्य की आशीषों में जीवन और मृत्यु शामिल हैं।
- जीवन को बदलने वाले एक जवाब की माँग की : मरकुस 1:16-20
- पापों की क्षमा : मरकुस 2:3-12

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. शत्रुओं पर जय प्राप्त की (1:43:35)

- उनके तर्कों को पछाड़ा
- उनके षड़यंत्रों को असफल कर दिया
- लोगों को उनके दमन से छुड़ाया
- उन्हें अनुमति दी कि वे उसे क्रूस पर चढ़ाएँ ताकि वह पाप के लिए प्रायश्चित बन सके
- दुष्टात्माओं और शैतानी ताकतों पर यीशु के अधिकार :

  प्रमाण कि यीशु परमेश्वर के राज्य को ले आया था।

  यीशु का राज्य शैतानी ताकतों और दुष्टता के राज्य से युद्ध करने और उसे हराने के लिए आ गया था।

- अन्तिम शत्रु : 1 कुरिन्थियों 15:26

  यीशु की महानतम विजय स्वयं मृत्यु पर थी।

  यीशु की मृत्यु ही मृत्यु पर उसकी विजय का माध्यम थी।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. उपसंहार (1:50:57)

मरकुस का सुसमाचार यीशु के चरित्र और सेवकाई के पहलुओं पर प्रकाश डालता है ::

- अपने चारों ओर के शक्तिशाली, ऊर्जावान, सक्रिय स्वामी के रूप में यीशु

- यीशु ने स्वेच्छा से कष्ट सहने वाले सेवक की भूमिका को चुना।

मरकुस हमें हमारे प्रभु के उदाहरण के प्रति विविध प्रत्युत्तरों की ओर बुलाता है :

- आश्चर्य में यीशु के चरणों पर गिरें

- चुपचाप उसकी सुनें

- पूरी आज्ञापालन के साथ उसके वचनों का प्रत्युत्तर दें

- परमेश्वर के राज्य के लिए कष्ट सहने के लिए तैयार रहें

- उत्साहित हों कि यीशु ने हमारे लिए विजय सुनिश्चित की

- इसी आशा में हम उस दिन तक स्थिर रहें जब यीशु अपने राज्य की पूर्णता में लौटेगा

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. हम कैसे जानते हैं कि मरकुस ने ही मरकुस रचित सुसमाचार लिखा है?

2. मरकुस के सुसमाचार के मूल श्रोता कौन थे?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. अपने सुसमाचार को लिखने में मरकुस का उद्देश्य क्या था?

4. किस प्रकार मरकुस का सुसमाचार यीशु को मसीहा के रूप में परिचित कराता है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. मरकुस के सुसमाचार में यीशु ने अपनी सामर्थ को कैसे प्रदर्शित किया?

6. यीशु मसीहा था इसकी चेलों द्वारा पुष्टि क्यों महत्वपूर्ण थी?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. अपनी मसीहारुपी सेवकाई के दौरान यीशु ने किस प्रकार दुःख उठाया?

8. अपने पुनरुत्थान के द्वारा यीशु ने किस प्रकार विजय प्राप्त की?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. एक कष्ट सहने वाले सेवक के रूप में यीशु ने किस प्रकार मसीहा के विषय में पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा किया?

10. यीशु ने किस प्रकार दर्शाया कि वह विजयी राजा है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. ऐसे कौनसे विशेष रूप हैं जिनमें मरकुस का सुसमाचार कष्टों और सताव को सहने में हमारी सहायता कर सकता है?
2. जब हम मरकुस के सुसमाचार में यीशु के चमत्कारों और राज्य के बारे में उसके प्रचार के बारे में पढ़ते हैं तो हमें कैसे प्रत्युत्तर देना चाहिए?
3. यीशु ने मसीही अगुवों को अपने लोगों के सेवक होने के लिए क्यों बुलाया?
4. आप अपनी वर्तमान परिस्थितियों और सेवकाई में सेवक-संबंधी अगुवाई को कैसे दर्शा सकते हैं?
5. ऐसे कौनसे विशेष रूप हैं जिनमें हम मसीही स्थिरता और वफादारी की यीशु की बुलाहट का प्रत्युत्तर दे सकते हैं?
6. यदि यह सोचें कि यीशु का अनुसरण करना मुश्किल है तो किस प्रकार के समझौते करने की हमें अनुमति है?
7. दुःख उठाने और सेवा करने की जो शक्ति परमेश्वर ने हमें दी है, उसका हमें किस प्रकार प्रयोग करना चाहिए?
8. यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि यीशु का अनुयायी बनने का अर्थ इस जीवन में दुःख और परेशानियाँ है?
9. मसीहा के विषय में विभिन्न यहूदी अपेक्षाओं से हम क्या सीख सकते हैं?
10. कष्ट और सताव के बीच हम यीशु की विजय में किस प्रकार आशापूर्ण रह सकते हैं?
11. क्योंकि हम यीशु को अभी पृथ्वी पर राज्य करता हुआ नहीं देख रहे हैं, इसलिए यीशु के बारे में जो संदेह उत्पन्न होते हैं उनके प्रति हमारा क्या प्रत्युत्तर होना चाहिए?
12. हमें इस समय के दौरान कैसे जीना है जब राज्य अस्थायी रूप से ढका हुआ है, धीरे-धीरे बढ़ रहा है, और कष्ट भी सह रहा है?
13. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org